कुम्भ मेले का आध्यात्मिक रहस्य

भारत धार्मिक पर्वों और मेलों का देश है। वैसे तो यहाँ नित्य प्रतिदिन कोई–न–कोई त्यौहार मनाया जाता रहता है; किंतु कुछ आयोजन इतने विशाल स्तर पर होते हैं जिनके लिए महीनों पहले से तैयारी करनी पड़ती है और ऐसे ही आयोजनों में से एक है कुम्भ का मेला। पुराणों में प्रसिद्ध है कि देवताओं और असुरों द्वारा किए गए समुद्र–मंथन से निकली सामग्रियों में सबसे अंत में निकला अमृत कुम्भ। इस कुम्भ को लेकर जब दोनों के बीच विवाद उत्पन्न हुआ तो इंद्र का पुत्र जयंत यह कुम्भ लेकर भाग खड़ा हुआ। फिर दोनों पक्षों के बीच 12 दिनों तक घमासान युद्ध हुआ, जिसमें सूर्य, चंद्र और बृहस्पति ने जयंत का साथ दिया और इस युद्ध में अमृत की कुछ बूँदें पृथ्वी पर प्रयाग, नासिक, हरिद्वार और उज्जैन में गिरी थीं, इसलिए हर बारह वर्ष बाद इन स्थानों पर कुम्भ मेलों का आयोजन किया जाता है। इन मेलों में करोड़ों श्रद्धालु तथाकथित पवित्र स्नान के लिए एकत्रित होते हैं।

वास्तव में भक्तिमार्ग की ये पौराणिक कथाएँ चतुर्युगी मनुष्य सृष्टि चक्र में कलियुग और सतयुग के संधिकाल अर्थात् पुरुषोत्तम संगमयुग पर घटने वाली घटनाओं की यादगार हैं। इस संगमयुग पर सभी मनुष्यात्माओं तथा परमपिता परमात्मा शिव का मिलन होता है। शिव–शंकर की बुद्धि रूपी जटाओं से प्रवाहित होने वाली ज्ञान गंगा में स्नान कर सभी आत्माएँ पवित्र बनती हैं, जिसके यादगार में द्वापरयुग से प्रारम्भ होने वाले भक्तिमार्ग में भारत की पवित्र समझी जाने वाली नदियों में स्नान कर भारतवासी यह समझते हैं कि उनके पाप इसमें धुल जाते हैं। वास्तव में भगवान कहते हैं कि नदियों के पानी में स्नान करने से तो केवल शरीर स्वच्छ होता है। किंतु आत्मा की शुद्धि तो सच्चे ज्ञान, भगवान के स्मरण और दिव्य गुणों की धारणा से ही होती है। इस पवित्र ज्ञान–गंगा में देह–अभिमान रूपी गंदगी समाप्त हो जाती है।

भारत में केवल गंगा ही नहीं, अपितु अन्य नदियों को भी पावनकारी माना जाता है। वास्तव में यह भी संगमयुग का ही यादगार है। वर्तमान संगमयुग में कई आत्माएँ तो सीधे परमपिता परमात्मा से ज्ञान सुनकर धारण करने से पवित्र बनती हैं और कई आत्माएँ परमात्मा से ज्ञान प्राप्त करने वाली आत्माओं के द्वारा ज्ञान प्राप्त कर नम्बरवार पवित्र बनती हैं। अतः जो आत्माएँ परमात्मा से ज्ञान प्राप्त कर औरों को पावन बनाने की सेवा करती हैं उनको ज्ञान की चैतन्य नदियाँ कहा जाता है; लेकिन केवल वो चैतन्य ज्ञान नदियाँ पावनकारी होती हैं जिनका सम्बन्ध ज्ञान सागर अर्थात् परमपिता परमात्मा से होता है। ऐसी नदियाँ अपने अंदर गिरने वाले खराब दृष्टि–वृत्ति के कचड़े को बहाकर सागर में समा जाती हैं; लेकिन ज्ञान के ऐसे चैतन्य तालाब और पोखर, जिनका ज्ञान–सागर परमात्मा से सीधा सम्बन्ध नहीं होता, वो पावनकारी तो होते नहीं, उल्टे सभी पतित मनुष्यों के विकारों रूपी कचड़े को एकत्रित करते–करते एक दिन सूखकर अपना अस्तित्व खो देते हैं।

पुरुषोत्तम संगमयुग पर चल रहे परमात्मा और आत्माओं का यह मेला 5000 वर्षों में एक ही बार होता है। वास्तव में ऊपर वर्णित पौराणिक कथा में जिस सूर्य और चंद्र का उल्लेख है, वो भी कोई स्थूल ग्रह–नक्षत्र नहीं, अपितु चैतन्य मनुष्यात्माएँ हैं, जिनके शरीर रूपी रथ में प्रवेश कर परमपिता परमात्मा पहले शीतल ममतामयी चंद्र–माँ (ब्रह्मा) की भूमिका अदा करते हैं और बाद में विकारी आत्माओं को सच्चे ज्ञान के तेज प्रकाश से भस्म करने वाले सूर्य (प्रजापिता) की भूमिका अदा करते हैं। इसलिए भक्तिमार्ग में गायन है– त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव या करनकरावनहार। तो विचार करिए कि पतित–पावनी कौन? पानी की स्थूल नदियाँ

या परमपिता परमात्मा का दिया सच्चा ज्ञान और उस ज्ञान से पावन बनकर औरों को बनाने वाली चौतन्य ज्ञान गंगाएँ? ओमशान्ति।

त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाचः– बेहद का बाप, ज्ञान का सागर, पतित–पावन, सद्गति दाता, गीता का भगवान शिव कैसे प्रजापिता ब्रह्माकुमार–कुमारियों द्वारा फिर से कलियुगी, सम्पूर्ण विकारी, (ब्राह्मणों की) भ्रष्टाचारी, पतित दुनिया को सतयुगी, सम्पूर्ण निर्विकारी, पावन, श्रेष्ठाचारी (दैवी) दुनिया बना रहे हैं – वह खुशखबरी आकर सुनो अथवा समझो। – ज्ञान मुरली दिनांक 25.10.66, 02.03.76, 17.03.86

पतित–पावन परमपिता परमात्मा शिव द्वारा महादेव शंकर के रूप में कार्य करने वाले साधारण मनुष्य तन के द्वारा प्रवाहित की जाने वाली ज्ञान गंगा से लाभान्वित होने के लिए संपर्क करें –

आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय,
मकान नं.351–352, ब्लाक–ए, फेस– I,
विजयविहार, रिठाला, रोहिणी सेक्टर–5 के पास,
दिल्ली–110085 मोबाइल नं.(0) 9891370007, (0) 9311161007
www.a1spiritual.info or www.pbks.info
ईमेल- a1spiritual1@gmail.com

सम्बन्धित अव्यक्त वाणी प्वाइंटः

"नदियों का महत्व तब है जब सागर से सम्बन्ध है, अगर सागर से सम्बन्ध नहीं तो नदी भी नाला बन जाती। तो आप चौतन्य ज्ञान नदियों का ही गायन है पतित–पावनी, इसी सेवा में सदा बिजी रहो।" – (अव्यक्त वाणी तारीख 16.1.79)